Education and Society
(शिक्षण आणि समाज)

Special Issue
UGC CARE Listed Journal
ISSN 2278-6864

Education and Society

Since 1977

The Quarterly dedicated to Education through Social Development and Social Development through Education

May 2023

(Special Issue-1I/ Volume-III)

INDIAN INSTITUTE OF EDUCATION

128/2, J. P. Naik Path, Kothrud, Pune - 411 038

Scanned by CamScanner

Indian Institute of Education

Education and Society

Special Issue on the theme of **"Socio-Economic Status of SC/ST In India and Human Recourse Development"** (National Seminar organized by Vivekanand College, Kolhapur sponserd by ICSSR New Delhi dated 12, 13 May 2023)

Prof. J. P. Naik and Dr. Chitra Naik

Founder of the Institute

Editorial Board:

Prin. (Dr.) Jayasing Kalake, Chief Editor

Dr. Prakash B. Salavi, Executive Editor

Mrs. Shailaja D. Sawant, Secretary

Guest Editors:

Dr. Govardhan Ubale

Dr. Shubhangi Kale

Publisher:

Indian Institute of Education

J. P. Naik Path, Kothrud, Pune- 38

Contact Numbers: 8805159904, 9834109804

Web-site: www.iiepune.org

Email: educationandsociety1977@gmail.com, iiepune1948@gmail.com

---

Education and Society, the educational quarterly is owned, printed and published by the Indian Institute of Education, Pune. It is printed at Pratima Mudran, 1-B, Devgiri Istate, Survey No. 17/1-B, Plot no. 14, Kothrud Industrial Area, Kothrud, Pune 38. It is published by the Editor Dr. Jaysing Kalake at Indian Institute of Education J. P. Naik Path, Kothrud, Pune- 38.
 Opinons or views or satatements and conclusions expressed in the articles that are published in this issue are personal of respective authors. The editor, editorial board and the institution will not be responsible for the same in any way.

Scanned by CamScanner

Education and Society

Content...

---

1. **कोल्हापूर जिल्हा पन्हाळा तालुक्यातील सामाजिक व आर्थिक विकास आणि स्त्री पुरुष लिंग गुणोत्तराच्या संहसंबंधाचा तुलनात्मक अभ्यास (२०११)**
Ms. Ashwini Muravane, Dr. Omprakash Shapurkar and Dr. Sunil Bhosale **009**

---

2. **आदिवासी समुदायाच्या समस्या- एक समाजशास्त्रीय अभ्यास**
Mr. Harishchandra Chame **017**

---

3. **रहिमतपूर शहरातील अनुसूचित जातींच्या सामाजिक व आर्थिक स्थितीचा अभ्यास**
Mr. Shivaji Sampat Chavan and Dr. Arun Patil **022**

---

4. **कोल्हापूर जिल्ह्यातील भुदरगड तालुक्यातील मेघोली व वासनोली वाडा या आदिवासी वाडयांचा सामाजिक आर्थिक जीवनाचा भौगोललकदृष्ट्या अभ्यास**
Mr. Sanjaykumar Menshi **031**

---

5. **दलित जीवन का दर्दनाक यथार्थ : छप्पर**
Dr. Dipak R. Tupe **039**

---

6. **Understanding The Tribal Population of Goa: A Socio- Demographic Overview**
Dr. Harpreet Singh **045**

---

7. **Role of Traditional Knowledge and Folk Culture of Missing Tribe of Assam in Sustaining Environment: A Deep Ecology Perspective**
Ms. Saikia Dhritisha, Mr. Prasad Riteish, Miss Aishwarya Hingmire and Mr. Mayur Goud **055**

---

8. **Unveiling the Voices of Resilience: Major Dalit Women Writers**
Dr. Shruti Joshi **064**

---

9. **Educational Attainment for Sustainable Livelihood: Challenges before Marginalized Society of Sugarcane-Cutters in Maharashtra (India)**
Dr. Shubhangi Kale and Dr. Sambhaji Shinde **072**

Scanned by CamScanner

दलित जीवन का दर्दनाक यथार्थ : छप्पर

डॉ. दीपक रामा तुपे
सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग,
विवेकानंद कॉलेज, कोल्हापुर (स्वायत्त)

सारांश:

मूलत: दलित चेतना भारतीय जाति, धर्म, वर्ग तथा वर्ण-व्यवस्था से की उपज है। सदियों से शोषित-पीड़ित, अपमानित, प्रताड़ित, उपेक्षित, अस्वीकारित, निषेधरहित, न्याय से वंचित लोगों का दलन, दमन, उत्पीड़न तथा शोषण हुआ। अपने को स्पृश्य समझनेवाला समाज हमेशा इन अस्पृश्य लोगों को गति देने के बजाय गतिरोध बनता गया। परिणामत: उनका अस्वीकार, निषेध, विद्रोह, संघर्ष, आक्रोश, चीख, घुटन, छटपटाहट तथा मूक अभिव्यक्ति बीसवीं सदी के साहित्य में अभिव्यक्त होने लगी। यही मूक अभिव्यक्ति दलितों में चेतना निर्माण करती रही। जयप्रकाश कर्दम लिखित छप्पर उपन्यास में यही दलितों की चेतना दिखाई देती है। प्रस्तुत उपन्यास दलितों की गुलामी और दासतां की जंजीरों को तोड़ता है और उन्हें समाज में समानाधिकार दिलाने की पूरजोर हिमायत करता है। शोषित, पीड़ित, उपेक्षित, वंचित दलितों में चेतना पैदा करता है। यौन-तृष्णा की शिकार हुई लड़कियों को न्याय दिलाने का भरसक प्रयास करता है। सवर्ण मनुवाद में परिवर्तन करना, दलितों को समता, न्याय, मानवता, बंधुता जैसे जीवन मूल्यों के प्रति जागृत करना छप्पर उपन्यास का प्रधान उद्देश्य रहा है।

प्रस्तावना:

प्राचीन काल में भारतीय समाज में चतुर्वर्ण व्यवस्था थी; जिसमें हिंदुओं के चार वर्ण ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र आदि भेद थे। इन शूद्रों को दास, गुलाम तथा हरिजन कहा जाता है। अब उन्हें दलित, बहुजन, अस्पृश्य, अछूत तथा निम्न आदि नामों से अभिहित किया जाता है। इन दलितों को अपनी गुलामी का एहसास दिलाने का काम कबीर, महात्मा फुले, छत्रपति राजर्षि शाहू महाराज, महर्षि कर्वे, वी. आर. शिंदे तथा डॉ. अंबेडकर आदि समाज सुधारकों ने किया। डॉ. अंबेडकर ने तो 'शिक्षित बनो, संगठित बनो और संघर्ष करो' का मंत्र देकर दलितों की सोई हुई अस्मिता जागृत की। परिणामत: दलितों में चेतना जागृत हुई।

की-वर्ड: दलित, अन्याय-अत्याचार, विद्रोह, शोषण, अस्वीकार, चेतना, समानता आदि।

मूलत: दलित चेतना भारतीय जाति, धर्म, वर्ग तथा वर्ण-व्यवस्था के कोख से जन्मी हरिजन की गाथा है। सदियों से शोषित-पीड़ित, अपमानित, प्रताड़ित, उपेक्षित, अस्वीकारित, निषेधरहित, न्याय से वंचित लोगों का हमेशा दलन, दमन, उत्पीड़न तथा शोषण हुआ है। अपने को स्पृश्य समझनेवाला समाज हमेशा इन अस्पृश्य लोगों को गति देने के बजाय गतिरोध बनता गया। परिणामत: उनका अस्वीकार, निषेध, विद्रोह, संघर्ष, आक्रोश, चीख, घुटन, छटपटाहट तथा मूक अभिव्यक्ति व्यक्त होने लगी। यही मूक अभिव्यक्ति दलितों में चेतना निर्माण करती है। सवर्ण मनुवाद ने उन्हें सामाजिक तौर पर नकारा, उनको दासतां का जीवन जीने के लिए मजबूर किया, पद-पद पर लांछित, उपेक्षित और

Scanned by CamScanner

अपमानित किया। जाति, धर्म, वर्ग, वर्ण-व्यवस्था के कटघरे में खड़ा करके उनकी उपेक्षा की, जिसके कारण ये दलित अपनी पहचान अस्तित्व, अस्मिता भूल बैठे हैं। मानवता, समता, न्याय, बंधुता, धर्मनिरपेक्षता आदि इन्सान के इन्सानियत के प्राण तत्त्व है, जिससे ये दलित हमेशा वंचित रहे हैं। इन दलितों के भोगे हुए यथार्थ की खामोशी को तोड़ने का प्रयास बुद्ध, कबीर, फुले तथा डॉ. अंबेडकर जैसे समाज सुधारकों ने किया। इन समाज सुधारकों ने दलितों को स्वतंत्रता, बंधुता, समता, न्याय, मानवता जैसे जीवन-मूल्यों के साथ-साथ समानाधिकार देने की कोशिश की। इसी परंपरा का निर्वाह जगदीश चंद्र, मदन दीक्षित, सत्यप्रकाश, मोहनदास नैमिशराय, ओमप्रकाश वाल्मीकि तथा जयप्रकाश कर्दम तथा हरनोट ने किया है। इन लेखकों ने अपनी रचनाओं में भोगा हुआ यथार्थ सर्जित किया। साथ ही सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक तौर पर समानाधिकार देने का प्रयास किया और चेतना भी निर्माण की।

बीसवीं सदी के अंतिम दशक में दलित उपन्यासकारों में जयप्रकाश कर्दम का नाम शीर्षस्थ है। सदी के अंतिम दशक में उनके द्वारा लिखा 'छप्पर' उपन्यास दलितों की उक्त स्थितियों की देन है। छप्पर उपन्यास दलितों की कथा-व्यथा, दुःख-दर्द को व्यक्त करता है। प्रस्तुत उपन्यास का नायक चंदन है, जो दलित है। वह पढ़ाई के लिए गाँव से शहर की ओर चला जाता है, लेकिन गाँव में रहने वाले पंडित तथा ठाकुरों को यह बात अनर्थ नहीं बल्कि महाअनर्थ लगती है, जिसके कारण चंदन के माता-पिता रमिया और सुक्खा पंडित, ठाकुर, साहूकारों के द्वारा अमानवीय व्यवहार का सामना करने के बजाय व्यथित-विकल जीवन जीने के लिए मजबूर किया जाता है। छप्पर उपन्यास के सुक्खा और रमिया दलितों के प्रतिनिधि पात्र है। सुक्खा और रमिया अन्याय-अत्याचार सहने वाले अनेक दलितों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

दरअसल दलितों को मालिक लोग बीस-तीस रुपयों के काम के बदले छः-सात रुपये देते हैं। उनके परिवार सुख-सुविधाओं से वंचित होते हैं। मनोरंजन का साधन उनके पास न के बराबर है। उनकी बीवी ही उनके मनोरंजन का एकमात्र साधन है। रूखा-सूखा खाकर सुबह-शाम जी तोड़ मेहनत करते हैं और फिर अगली सुबह उठकर रोजी-रोटी के जुगाड़ में उलझ जाते हैं; इसी में ही उनके जीवन की सारी गति समा जाती है। ये दलित लोग एक-दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग, सहानुभूति और मान-सम्मान का व्यवहार करते हैं। लेकिन दुःख की बात यह है कि ये दलित लोग अपना कमाया हुआ बहुत बड़ा हिस्सा दारुबाजी या जुए में बर्बाद कर देते हैं, जिसके कारण अधिकांश लोग व्यसनाधीनता से ग्रस्त हैं। रात-दिन कमरतोड़ मेहनत करने के बावजूद इनका जीवन स्तर ऊपर नहीं उठ पाता क्योंकि वे रात में देर तक शराब के नशे में धुत्त बीवी-बच्चे तथा एक-दूसरे के साथ गाली-गलौज करते हैं, मार-पीट करते हैं, चीखते-चिल्लाते हैं, शोर-शराबा करते हैं, जो उनकी आम बातें बन गई हैं। 'छप्पर' उपन्यास इन्हीं स्थितियों का दस्तावेज देता है।

अकाल, महामारी, बाढ़-प्रकोप तथा प्राकृतिक आपदाओं का सामना करते-करते उनका दम घुट जाता है, जिसके कारण उनके उम्मीदों के महल रेत के ढेर के समान बिखर जाते हैं। ये दलित पशुवत् जिंदगी जीते हैं, अमानवीय अत्याचार सहते हैं, शोषण और बर्बरता की चक्की में पिसते रहते हैं। अपनी गुजर-बसर के लिए साहूकारों के तलुए सहलाते हैं और ठाकुर-जमींदारों के साले और बच्चे की गालियाँ भी खाते हैं। उन्हें गुड़ की डली और प्याज की गंठी के बजाय रूखी-सूखी रोटी खाकर दिन गुजारने पड़ते हैं। ये दलित अभाव, उत्पीड़न और बेबसीभरा जीवन जीते हैं। सुख-चैन का जीवन जीने के बजाय विवशतापूर्ण जीवन जीते हैं। खाली पेट, नंगे तन, टूटे-फूटे झोपड़ें में गुजर-बसर करते हैं। व्यथापूर्ण जीवन जीते है और दर-दर की ठोकरें खाते हैं। इतना सारा होने के बावजूद ये दलित सबकुछ किस्मत का खेल समझकर भगवान के ऊपर छोड़ देते हैं, जो भगवान उन्हें दो वक्त की रोटी के लिए दूसरों का मोहताज बनता है, उनके साथ घृणा और उपेक्षा का व्यवहार करता है, शोषण, अन्याय, अत्याचार का शिकार बनता है और दुर्दशा। स्वयं चंदन

Scanned by CamScanner

के शब्दों में - "तुम्हारी जो आज दीन-हीन हालत है, तुम जो रोजी-रोटी के लिए दूसरों के मोहताज हो और तुमको नीच, अछूत या हेय मानकर दूसरे लोग तुमसे जो घृणा और उपेक्षा का व्यवहार करते हैं, तुम जो शोषण, अपमान और अत्याचार के शिकार हो इस सबका कारण ईश्वर है, वही तुम्हारी यह दुर्दशा कर रहा है।"1 स्पष्ट है कि चंदन का उक्त कथन दलितों के साथ बुरा, अमानवीय व्यवहार करने वाले ईश्वर को न मानने का संदेश देता है। साथ ही वह यज्ञ-अनुष्ठान का विरोध करता है और यज्ञ-अनुष्ठानों का पैसा समाज-सुधार, बच्चों की पढ़ाई, गली के रास्ते तथा महिलाओं के सिलाई-बुनाई का प्रशिक्षण देने के लिए खर्च करने की सलाह देता है।

सचमुच दलित लोग प्यार, मर्मांतक पीड़ा एक-दूसरे का दुःख-दर्द बाँटकर जिंदगी साथ-साथ निभाते हैं। हिम्मत और हौसले में जीवन जीते हैं, बड़े-से-बड़े त्याग करते हैं, भूखे-प्यासे रहकर दोपहरी-तिपहरी कमाते हैं। लेकिन जब लगान वसूल करने का अमीन आता है तब खेत बेदखल होने के भय से डरते हैं। 'छप्पर' उपन्यास का सुक्खा इन्हीं स्थितियों को झेलता है। सुक्खा मेहनत मजदूरी करके एक-दो बीघे की बैंडिय खरीदता है। उसमें खाने-पीने के लिए थोड़ा अनाज खेत में हो जाता था और ठाकुर-जमींदारों के खेतों में लाई-पताई होती थी। एक भैंस थी उसका दूध बेचकर साग-सब्जी और चंदन का खर्चा भी चलता था। सबकुछ अच्छी तरह से चल रहा था। लेकिन एक दिन वही भैंस गलघोट की बीमारी की चपेट में आकर मर जाती है। खेत बेदखल हो जाता है। ब्राह्मण, ठाकुरों को सुक्खा के बेटे चंदन का पढ़ाई के लिए शहर जाना अधर्म लगता है, अपमान लगता है। इन ब्राह्मणों का मानना है कि सुक्खा कितना भी बड़ा हो, लेकिन धर्म-शास्त्र, वेद-वेदांगों से बड़ा नहीं हो सकता। सुक्खा अपने-अपको पंडित, ठाकुर, साहूकारों का गुलाम समझता है, घबराता है, लेकिन अन्याय के खिलाफ हिम्मत नहीं जुटा पाता। सेठ-साहूकार, ठाकुर और काणा पंडित धोखेबाज तथा मक्कार है फिर भी उसे कहने का ढाढस नहीं होता है। परिणामत: वे ठाकुर पीड़ितों के अत्याचारी कानून को सहते हैं। डॉ. संजय नवले के शब्दों में-"गाँवों में ब्राह्मण, ठाकुर, पुरोहित प्रमुख होते हैं। अपने से बड़ा कोई नहीं होना चाहिए, इसलिए वे धर्मशास्त्र का आधार लेकर गरिबों, दलितों का डरा धमकाकर राज चलाते हैं। आर्थिक संपन्नता उनका मजबूत पक्ष होता है। घोर आर्थिक दरिद्रता के कारण दलित लाचार होते हैं। मजबूरन उन्हें उनके कायदे-कानून को स्वीकारना पड़ता हैं।"2 सवर्ण लोग इन दलितों को जूती की धूल के बराबर समझते हैं। पंडित और ठाकुर पंचायत बुलाते हैं। पंचायत फैसल करती है कि चंदन को शहर से वापस बुलाया जाए, लेकिन सुक्खा मानता नहीं तब उसे खेत-क्यार में घूसने न देना, किसी डौंले-चक-रोड से घास-खोदने न देना, लाई-पताई न देना और मजदूरी के लिए न बुलाना जैसे अमानवीय व्यवहार करते हैं। जीवन भर घृणा, उपेक्षा और अपमान का शिकार होने वाले सुक्खा का स्वाभिमान जाग उठता है। भैंस की मृत्यु होना, पंडितों, साहूकारों, जमींदारों द्वारा कमाई के रास्ते बंद करना, खेत बेदखल करना, घर गिरवी रखना आदि मुसीबतों को सहने वाला सुक्खा नारकीय जीवन जीता है, लेकिन अपने बेटे की पढ़ाई में रोड़े अटकाने वाले सवर्णों के सामने कभी नहीं झुकता। वह कई दिन के लिए अपना छप्पर अर्थात् मातापुर छोड़ देता है लेकिन चंदन की पढ़ाई जारी रखता है।

हमारे यहाँ संविधान ने हर नागरिक को स्वाभिमान से जीवन जीने के लिए समान अधिकार दिए हैं। इतना ही नहीं; वह अपने व्यवसाय तथा जीवन की दिशा भी निर्धारित करने की स्वतंत्रता दी है। इसी कारण अब दलित काबिल बन रहे हैं, जागृत हो रहे हैं। लेकिन सवर्णों को इन दलितों के पढ़ने-लिखने पर भी ऐतराज है। उन्हें गर्व होने के बजाय उनकी पढ़ाई में रूकावटें डालते हैं। प्रस्तुत उपन्यास के ठाकुर साहब और सुक्खा में चंदन की पढ़ाई को लेकर कहा-सुनी होती है। वे अपने अधिकारों के बूते पर ज्यादती, अन्याय-अत्याचार कर उसे गाँव से बाहर जाने के लिए विवश करते हैं तब उनकी बेटी रजनी अपने पिता को इन शब्दों में समझाते हैं-"संविधान के अनुसार देश के प्रत्येक व्यक्ति को अपनी

Scanned by CamScanner

स्वेच्छानुसार व्यवसाय चुनने और जीवन की दिशा निर्धारित करने की स्वतंत्रा है। यदि चंदन पढ़-लिखकर कुछ काबिल बनना चाहता है तो यह उसका संवैधानिक हक है, इस पर किसी को एतराज क्यों होना चाहिए। चंदन कहीं बड़ा अफसर बन जाएगा; पढ़-लिखकर तो इसमें बुरा क्या है? इस बात पर तो समूचे गाँव को गर्व होना चाहिए। सुक्खा यदि अपना पेट काटकर अपने बेटे को पढ़ाना चाहता है तो उसको ऐसा करने से क्यों रोका जाए? मैं तो कहती हूँ कि इसके लिए तो सुक्खा की मदद की जानी चाहिए और दूसरे लोगों को भी सुक्खा से प्रेरणा लेकर अपने बच्चों को पढ़ा-लिखाकर काबिल बनाना चाहिए। जब तक दूसरे लोग भी सुक्खा की तरह अपने बच्चों को पढ़ा-लिखाकर काबिल बनाना चाहिए। जब तक दूसरे लोग भी सुक्खा की तरह अपने बच्चों को काबिल बनाने की ओर ध्यान नहीं देंगे तब तक न देश का उत्थान होगा और न समाज का।"3 रजनी का उक्त कथन दलितों के समानाधिकार के साथ-साथ स्वाभिमान की माँग करता है।

सचमुच मानव जीवन में शिक्षा का महत्त्व अन्यन्यसाधारण है। लेकिन शिक्षा के अभाव में इन्सान कीड़े-मकौड़ों की तरह जीवन जीता है, पीड़ित, शोषित, उपेक्षित और पशुवत् व्यवहार सहता है, अन्याय-अत्याचार तथा शोषण का शिकार बन जाता है। लेकिन इन्सान अगर शिक्षित होता है तो उसमें जागृति पैदा होती हैं। प्रस्तुत उपन्यास का नंदलाल वकालत कर कानूनी मामलों में लोगों की मदद कर शोषण और अन्याय-अत्याचार के मुकादमें मुक्त में लड़ने के लिए तैयार होता है, रतन प्रशासनिक तौर पर मदद करने को तैयार होता है तब चंदन कहता है कि "मैं अपनी शिक्षा का उपयोग अपने दीन-हीन समाज के उत्थान के लिए करूँगा। मैं उन पीड़ित, शोषित और उपेक्षित लोगों को ऊपर उठाने के लिए काम करूँगा। मैं उन पीड़ित, शोषित और उपेक्षित लोगों को ऊपर उठाने के लिए काम करूँगा जो कीड़े-मकौड़ों की तरह जीते हैं। शेष समाज जिनके साथ पशुवत व्यवहार करता है, उनको पास नहीं बिठाता और उनसे घृणा करता है। पीढ़ी-दर-पीढ़ी के कर्ज ने जिनकी कमर तोड़ दी है और उसी कर्ज को चुकाने के लिए जो बंधुआ बनकर जीने को विवश होते हैं। ठाकुर जमींदारों की मार सहते हैं, हर तरह के अन्याय, शोषण और उत्पीड़न के शिकार होते हैं। उन लोगों को शिक्षित करूँगा। मैं इन सोए लोगों को जगाऊँगा और उनमें जागृति पैदा करूँगा ताकि अपने शोषण की जंजीरों को तोड़-फेंकने के लिए वे उठ खड़े हों।"4 स्पष्ट है कि चंदन शोषण की जंजीरों को तोड़ने के लिए दलितों में चेतना जगाने का प्रयास करता है।

साहित्य समाज का दर्पण होता है, लेकिन सोया हुआ समाज मुर्दों के समान निष्प्राण होता है, जिसे नष्ट होने का भय हमेशा रहता है। शोषण एवं अत्याचार से पीड़ित जर्जर सोने वाले समाज को जगाना बहुत जरूरी होता है। सोए हुए समाज को जगाने के लिए किसी-न-किसी को अपनी नींद का त्याग करना पड़ता है। 'छप्पर' उपन्यास में इसी स्थिति का जिक्र मिलता है। इस उपन्यास का चंदन, दिन-रात, भूखा-प्यासा रहता है। साथ ही समाज जागृति के लिए मिटिंग या सम्मेलन के कारण थकते हुए भी ठीक तरह से आराम नहीं करता जब हरिया उसे आराम करने के लिए कहता हैं तब चंदन हरिया से कहता है-"बाबा हमारा समाज सोया हुआ है और व्यक्ति हो या समाज, वह चाहे कितना ही समर्थ और बलवान क्यों न हो, यदि वह सोया हुआ है तो वह मुर्दे के समान निश्चल और निष्प्राण है, उसे कोई भी आसानी से खत्म कर सकता है और हमारा समाज न केवल सोया हुआ है बल्कि यह जंजीरों में जकड़ा हुआ है। शोषण और अत्याचार की मार से पीड़ित और जर्जर यह समाज कहीं हमेशा के लिए सोता ही न रह जाए इसलिए उसे जगाना जरूरी है। सोए हुए समाज कहीं हमेशा के लिए और आराम का त्याग करना ही पड़ेगा न।"5 चंदन का उक्त कथन अपने समाज के प्रति होने वाली निष्ठा और लगन का परिचायक है जो सोए हुए समाज में चेतना जागाने का कार्य करता है।

वस्तुतः कई सवर्ण लोग अपने हित के लिए दूसरों के हित की चिंता नहीं करते। ऐसी समाज-व्यवस्था में

Scanned by CamScanner

सवर्ण स्वार्थी लोग परिवर्तन नहीं चाहते। लेकिन कई लोग मानवतावादी दृष्टि से सोचकर उन्हें न्याय दिलाने के लिए समानता का व्यवहार करना चाहते हैं। प्रस्तुत उपन्यास का काणा पंडित पुरानी-व्यवस्था को खत्म नहीं करना चाहता। लेकिन ठाकुर साहब की बेटी रजनी कहती है कि व्यवस्था अगर उत्थान के बजाय पतन का कारण बनती हो तो उसमें बदलाव की जरूरी है। काणा पंडित कहता है कि व्यवस्था बदलने पर अहित होगा। उसी समय रजनी काणा-पंडित का प्रतिवाद करती है-"आप ठीक कहते हैं कि हर चीज में हित-अहित जुड़ा हुआ है। पर अपने हित की खातिर दूसरे के हितों की बलि चढ़ाना क्या उचित है? सुख और सम्मान कौन नहीं चाहता। जिस व्यवस्था के चलते एक व्यक्ति को सबकुछ मिले और दूसरा अभाव और उत्पीड़न में डूबा रहें, व्यवस्था कहेंगे आप इसे। मैं पूछती हूँ यह कौन-सी व्यवस्था है, यह कहा का न्याय है? ब्राह्मण और भंगी क्या दोनों की शरीर रचना एक जैसी नहीं होती। क्या दोनों हाड़-मांस के बने हुए नहीं होते? क्या दोनों के शरीर में बहने वाले खून का रंग एक जैसा नहीं है? फिर दोनों समान क्यों नहीं हो सकते?"6 रजनी का उक्त कथन मानवतावादी विचारों का परिचायक है। वह सवर्ण होकर भी दलिता का हित चाहती है और उसके साथ समानता का व्यवहार भी करती है। अपने पिता के व्यवहार में वह परिवर्तन भी करती है। वह शोषण तथा जातीयता का विरोध कर वैचारिक परिवर्तन की हिमायत करती है।

आजकल सामंतीवादी मालिक लोग अपने हवस को पूरा करने के लिए दलितों के साथ मनचाहा व्यवहार करते हैं। इतना ही नहीं; वे इन दलितों की लड़कियों पर बलात्कार भी करते हैं, जिसके कारण समाज में कई लड़कियाँ यौण-तृष्णा की शिकार हो रही हैं। परिणामत: समाज में कुमारी माता जैसी नई संकल्पना जन्म ले रही है। 'छप्पर' उपन्यास का हरिया अपनी बेटी कमला पर हुआ अत्याचार चंदन के सामने बयां करता हैं-"दोपहर का समय था। वह पानी लेने नल के गई थी कि मालिक तथा कुछ अन्य लोगों ने उसके साथ जबरदस्ती बलात्कार किया और उसे कहीं का नहीं छोड़ा। मुझे पता चला तो खून खौल उठा मेरा। मन किया कि सिर फोड़ दूँ एक-एक का। मैंने मालिक से शिकायत की तो उसने दो सौ रुपये दिखाए और मुझे कहा, ये लो और अपने घर जाओ और जो हो गया उसे भूल जाओ मैंने प्रतिवाद किया, मेरी बेटी का जीवन तबाह हो गया और आप कहते हैं मैं भूल जाऊँ।"7 कहना आवश्यक नहीं कि हरिया का उक्त कथन मालिकों के अत्याचारी वृत्ति का परिचय देता है। मालिक के इस बर्ताव के कारण ही हरिया उसे मार देता है, जिसने उनके बेटी का जीवन तबाह कर डाला था। इसी घटना के कारण कमला घर छोड़ देती है, जिसके कारण पिता-बेटी में बिखराव आता है। तब कमला स्कूल में अपने बेटे का नाम दर्ज करने के लिए आती है तब बच्चे के पिता के नाम का प्रश्न खड़ा होता है। चंदन को कमला और हरिया की कहानी एक जैसी प्रतीत होती है जिसके कारण पिता-बेटी में बिखराव आया था। उन दोनों में चंदन मेल करा देता है। उसी कमला की एक दिन चंदन द्वारा चलाए गए समानता आंदोलन में मृत्यु हो जाती है। वैसे देखा जाए तो कमला, चंदन और रजनी के प्यार में बाधक नहीं जबकि साधक थी फिर भी लेखक ने कमला के स्वावलंबन तथा सजीवता की मृत्यु क्यों दिखाई है? जो कमला अपने बच्चे के सहारे अन्यायी-अत्याचारी-बलात्कारी मालिक तथा उनके साथियों का बदला लेना चाहती थी और आत्मसम्मान से जीना भी। अंत में कमला के बेटे को रजनी और चंदन माता-पिता के रूप में स्वीकार करते हैं।

प्रस्तुत उपन्यास के केंद्र में मातापुर गाँव है। लेखक जयप्रकाश कर्दम ने मातापुर गाँव को भारत का प्रतिनिधि गाँव मानकर जातिवाद और वर्णवाद का पर्दाफाश किया है। कथानक प्रभावी एवं प्रवाहमयी है। प्रस्तुत उपन्यास के पात्र दो भागों में विभाजीत है-सवर्ण और दलित। सवर्ण पात्र के रूप में ब्राह्मण, पंडित काणा, ठाकुर-जमींदार हरनामसिंह और लाला साहूकार आदि है। दलित पात के रूप में सुक्खा, रमिया, हरिया, कमला, चंदन तथा रजनी है। संवाद छोटे, चुस्त और जिज्ञासावर्धक है। भाषा स्पष्ट, बोधगम्य, सीधी-सरल और रोचकता पैदा करने वाली बोलचाल की भाषा है।

Scanned by CamScanner

निष्कर्ष:

अंततः कहना सही होगा कि जयप्रकाश कर्दम लिखित छप्पर उपन्यास दलितों की गुलामी और दासतां की जंजीरों को तोड़कर उन्हें समाज में समानाधिकार दिलाने की पूरजोर हिमायत करता है। शोषित, पीड़ित, उपेक्षित, वंचित दलितों में चेतना पैदा करता है। यौन-तृष्णा की शिकार हुई लड़कियों को न्याय दिलाने का भरसक प्रयास करता है। सवर्ण मनुवाद को बदलकर दलितों को समता, न्याय, मानवता, बंधुता जैसे जीवन मूल्यों से अवगत कराना 'छप्पर' उपन्यास का प्रधान लक्ष्य है। मिथ्या बोलने वाले पांखडी पंडितों की पोल खोलना, ठाकुरों के अन्याय-अत्याचार का पर्दाफाश करना तथा साहूकारों के द्वारा होने वाले शोषण का चित्रण कर दलितों को न्याय दिलाना प्रस्तुत उपन्यास का प्रधान उद्देश्य रहा है। साथ ही ये दलित समाज में अहिंसात्मक अर्थात् गांधीवादी मार्ग से संघर्ष कर समानता हासिल करना चाहते हैं। संक्षेप में जयप्रकाश कर्दम कृत छप्पर उपन्यास उपेक्षित और वंचित दलित जीवन का दर्दनाक यथार्थ प्रस्तुत करता है; इसमें संदेह नहीं।

संदर्भ संकेत:

1. जयप्रकाश कर्दम, छप्पर, (संगीता प्रकाशन, विश्वास नगर, दिल्ली-110 032) संस्करण:1994, पृष्ठ-22
2. डॉ. चंदूलाल दुबे-भारतवाणी, जुलाई-2003, पृष्ठ - 3
3. जयप्रकाश कर्दम, छप्पर, (संगीता प्रकाशन, विश्वास नगर, दिल्ली-110 032) संस्करण:1994, पृष्ठ-66
4. वही, पृष्ठ - 43
5. वही, पृष्ठ - 77
6. वही, पृष्ठ - 81
7. वही, पृष्ठ - 73

Scanned by CamScanner